Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

विजन इंडिया @2047 और विकास मे युवाओं की भूमिका

डॉ. जितेन्द्र सेन*

* सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र) पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – 21वीं सदी भारत की सदी है आज यह दुनिया की 5 वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और 2027 तक यह दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगी, क्योंकि इसका जीडीपी 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर को पार कर जाएगा। 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र के सभी गुणों के साथ 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है।[3] भारत इस महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है, जो अपने विकास पथ पर आगे बढ़ने के लिए तैयार है, यह समझना महत्वपूर्ण है कि इस क्षमता को साकार करने के लिए जबरदस्त समर्पण और विश्वास के साथ–साथ दृढ़ नेतृत्व की आवश्यकता है। यह भारत का अमृत काल है पिछले वर्षों में समग्र नीतियों और योजनाओं के विस्तार के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक बुनियादी ढांचे में बड़े पैमाने पर विस्तार हुआ है। 'विकसित भारत' का औपचारिक शुभारंभ एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर है। भारत की स्वतंत्रता के 100वें वर्ष, यानी वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाने की संभावना वास्तव में मनोरम है।[8] देश की तीव्र प्रगति को देखते हुए इस महत्तवाकांक्षी लक्ष्य को साकार कर सकना संभव नजर आता है। यह क्षण इच्छित विकास की अवधारणा का मूल्यांकन करने का भी अवसर प्रदान करता है। अमृत काल विमर्श का उद्देश्य राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के प्रयास में शैक्षणिक संस्थानों के परिसरों में विकासात्मक शोध, नीति निर्माण और कार्यान्वयन के विषयों पर बातचीत की मेजबानी करने के लिए एक मंच बनना है।[7] इस प्रयास की एक अन्य प्रमुख पहल पीएम मोदी के विकसित भारत के दृष्टिकोण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के मामलों में युवाओं की आवाज को उजागर करना है।[2] इसके परिणामस्वरूप, इसमें मुख्य रूप से एक क्रिया–उन्मुख दृष्टिकोण शामिल होगा जिसमें युवाओं को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के बारे में पढ़ाना और उनके दृष्टिकोण और कार्यों को राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के साथ संरेखित करने के लिए लक्ष्यों पर चर्चा को बढ़ावा देना शामिल है।[5] इसके अलावा, युवाओं को राष्ट्रीय विकास पहलों के लिए उनकी आविष्कारशीलता और रचनात्मकता का उपयोग करने और प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, पर्यावरण की स्थिरता आदि सहित प्रमुख उद्योगों में प्राथमिकताओं को फिर से परिभाषित करने के लिए उनकी राय और विचार पूछकर विचार प्रक्रिया में शामिल करना। भारत की युवा आबादी एक अद्धितीय जनसांख्यिकीय लाभ है, जिसमें हमारी 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। इस जीवंत समूह में रचनात्मकता, नवाचार और लचीलेपन का एक अप्रयुक्त स्रोत है।[3] इस अपार क्षमता का दोहन करने के लिए, उनकी ऊर्जा को रचनात्मक रास्तों की ओर मोड़ना और उन्हें आत्म–अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक उपकरण और मंच प्रदान करना अनिवार्य है।

विजन इंडिया@2047 – विजन इंडिया@2047 अगले 25 वर्षों में भारत के विकास की एक परियोजना तैयार करने के लिये भारत के शीर्ष नीति थिंक टैंक नीति आयोग द्वारा शुरू की गई एक योजना है।[3] इस योजना का लक्ष्य भारत को नवाचार एवं प्रौद्योगिकी में वैश्विक अग्रणी देश बनाना है जो मानव विकास एवं सामाजिक कल्याण के साथ एक मॉडल देश बनाना और पर्यावरणीय संवहनीयता के पक्ष–समर्थक बनाना है। इसके मुख्य उद्देश्य मे शामिल है[5] 18–20 हजार अमेरिकी डॉलर की प्रति व्यक्ति आय और मजबूत सार्वजनिक वित्त एवं एक सुदृढ़ वित्तीय क्षेत्र के साथ 30 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था प्राप्त करना, ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में विश्वस्तरीय आधारभूत संरचना और सुविधाओं का निर्माण करना, नागरिकों के जीवन में सरकार के अनावश्यक हस्तक्षेप को समाप्त करना[9] और डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं शासन को बढ़ावा देना, विलय या पुनर्गठन द्वारा और स्वदेशी उद्योग एवं नवाचार को बढ़ावा देने के माध्यम से हर क्षेत्र में 3–4 वैश्विक चौंपियन विकसित करना, रक्षा और अंतरिक्ष क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना तथा विश्व में भारत की भूमिका की वृद्धि करना, नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में वृद्धि और कार्बन उत्सर्जन को कम करके हरित विकास एवं जलवायु कार्रवाई को बढ़ावा देना, युवाओं को कौशल एवं शिक्षा के साथ सशक्त बनाना और रोजगार के अधिक अवसर पैदा करना , देश में शीर्ष स्तर की 10 प्रयोगशालाओं के निर्माण के लिये विदेशी अनुसंधान एवं विकास संगठनों के साथ साझेदारी करना और कम से कम 10 भारतीय संस्थानों को वैश्विक स्तर पर शीर्ष 100 की सूची में लाना।[6]

भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति – भारत की अर्थव्यवस्था ने भुगतान संतुलन के तनाव का सामना किए बिना 1947 के बाद से सबसे लंबी अवधि गुजारी है। हालांकि, अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों ने समान गतिशीलता नहीं दिखाई है, कृषि का प्रदर्शन वास्तव में चिंता का कारण बन गया है'।[1] 1980के बाद से, इसकी आर्थिक विकास दर दोगुनी से अधिक हो गई है, जो 1950–1980 में 1.7 प्रतिशत (प्रति व्यक्ति के संदर्भ में) से बढ़कर 1980–2000 में 3.8 प्रतिशत हो गई है'।[2] इस दौरान, औद्योगिक उद्योगों के लिए क्षमता विस्तार और लाइसेंसिंग आवश्यकताओं पर महत्वपूर्ण प्रतिबंध भी लगाए गए थे।5 1980 के बाद, कई व्यवसाय समर्थक सुधार लागू किए गए क्योंकि यह स्पष्ट हो गया कि प्रतिबंधित प्रणाली वांछित परिणाम नहीं दे रही थी। भारत 1980 के दशक से अपनी अर्थव्यवस्था को बदलने के लिए धीरे–धीरे और विधिवत रूप से प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहा है। 1991 का

भुगतान संतुलन संकट और उसके बाद के सुधार भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण मोड़ थे।[1] इन सुधारों का मुख्य लक्ष्य कानूनों, परमिट और लाइसेंस की जटिल प्रणाली को खत्म करना, उत्पादन के साधनों के राज्य स्वामित्व और सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के विकास के पक्ष में पर्याप्त पूर्वाग्रह को उलटना और व्यापार नीति को समाप्त करना था।12 1990 के दशक के उत्तरार्ध में विकास में कुछ मंदी देखी गई, जो पूर्वी एशियाई वित्तीय संकट की शुरुआत के साथ मेल खाती थी। कुल मिलाकर, 1990 के दशक के दौरान, वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि औसतन 5.8% वार्षिक थी। 2000 के दशक में, भारत की वार्षिक दशकीय औसत वृद्धि दर 6.3% थी। लेकिन 2008 के विश्व वित्तीय संकट ने विकास की कमजोर नींव को उजागर करते हुए इमारत को ढहा दिया।[7] इसके बाद के वर्षों में सरकार ने बड़े बजट घाटे चलाए और तीव्र वृद्धि को बनाए रखने के प्रयास में लंबे समय तक अत्यधिक अनुमेय मौद्रिक नीति बनाए रखी। विभिन्न आकलनों के अनुसार वर्ष 2030 तक भारत की जीडीपी जापान और जर्मनी को पीछे छोड़ देगी। रेटिंग एजेंसी का अनुमान है कि भारत की नॉमिनल जीडीपी वर्ष 2022 में 3.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2030 तक 7.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाएगी।[2] आर्थिक विस्तार की इस तीव्र गति के परिणामस्वरूप भारतीय सकल घरेलू उत्पाद का आकार बढ़ेगा और भारत एशिया-प्रशांत क्षेत्र में दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। आयोग के पूर्वानुमान के प्रारंभिक परिणामों में भविष्यवाणी की गई है कि वर्ष 2047 में भारत के निर्यात का मूल्य 8.67 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर होगा जबकि इसके आयात का मूल्य 12.12 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर होगा।[4]

राष्ट्रीय विकास मे युवाओं की भूमिका – राष्ट्रीय विकास एक रचनात्मक प्रक्रिया है जिसमें देश के सभी लोगों को राजनीतिक स्थिरता, सामाजिक एकता और देश की आर्थिक समृद्धि के निर्माण में शामिल किया जाता है। यह देश के विकास की प्रक्रिया में सभी नागरिकों को शामिल करता है। युवा जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा हैं। इसलिए, हमारे राष्ट्र के विकास में उनकी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत की औसत जीवन प्रत्याशा 67.2 (वर्ष 2021 में) से बढ़कर 71.8 हो जाएगी और इसकी साक्षरता दर 77.8% (वर्ष 2021 में) से बढ़कर 89.8% हो जाएगी। जनसांख्यिकीय लाभांश भारत में एक बड़ी और युवा आबादी मौजूद है जो विभिन्न क्षेत्रों के लिये कुशल और उत्पादक कार्यबल प्रदान कर सकती है।8 रिपोर्टों के अनुसार, भारत की आबादी 1.4 बिलियन से अधिक है, जिसमें 40% से अधिक लोग 25 वर्ष से कम आयु के हैं। यह आर्थिक विकास के लिये एक बड़ा जनसांख्यिकीय लाभांश प्रदान करता है। युवा पीढ़ी में एक संपन्न स्टार्टअप वातावरण के विकास का नेतृत्व करने की क्षमता है जो तकनीकी प्रगति, आर्थिक समावेशन और रोजगार सृजन को बढ़ावा देती है। इसके अलावा, भारत की युवा पीढ़ी में गरीबी, पर्यावरणीय गिरावट और लैंगिक असमानता जैसी तत्काल सामाजिक चिंताओं से निपटने में महत्वपूर्ण योगदान देने की क्षमता है। हालांकि, भारत के युवाओं के वादे को साकार करने के लिए इसमें शामिल सभी पक्षों की ओर से समन्वित प्रयास किए जाने चाहिए। भारत में अपनी युवा आबादी के कारण कौशल के लिए वैश्विक केंद्र बनने की क्षमता हैय हालांकि, इसके लिए प्राथमिकताओं में बदलाव की आवश्यकता होगी क्योंकि हम अपने युवाओं की क्षमताओं को तैयार और सुधार कर उन्हें बाजार में बेचने योग्य और उत्पादक बना सकते हैं। युवा भारत की रचनात्मकता और नवाचार की क्षमता के साथ-साथ डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसी सहायक सरकारी नीतियों के कारण युवा रोजगार सृजनकर्ता बन रहे हैं। भारत में 100 से अधिक यूनिकॉर्न हैं, जिनका कुल मूल्यांकन 340 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है और यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन गया है। भारत इस महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है, जो अपने विकास पथ पर आगे बढ़ने के लिए तैयार है,8 यह समझना महत्वपूर्ण है कि इस क्षमता को साकार करने के लिए भारत के भाग्य में जबरदस्त समर्पण और विश्वास के साथ-साथ दृढ़ नेतृत्व की आवश्यकता है। 2047 तक भारत को विकसित भारत बनाने के लिए मिशन मोड में बहुत काम करने की जरूरत है।

निष्कर्ष – हमारे राष्ट्र के विकास के लिए युवाओं की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। हमारे देश को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वित्त, स्वास्थ्य, नवाचार के क्षेत्र में प्रगति हासिल करनी है तो युवाओं की उत्साही और ईमानदार भागीदारी की आवश्यकता है। युवाओं की ऊर्जा, रचनात्मकता, उत्साह, दृढ़ संकल्प और भावना को प्रगति प्राप्त करने के लिए चौनलाइज किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय विकास में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए, उन्हें उनके माता-पिता, नागरिक समाज और सरकार द्वारा प्रोत्साहित और समर्थित किया जाना चाहिए। युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार के अवसर और सशक्तीकरण प्रदान करना राष्ट्र की प्रगति और विकास को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण कारक हैं। 2047 में विकसित भारत को साकार करने के लिए भारतीय युवाओं की सक्रिय और प्रगतिशील भूमिका बहुत जरूरी है। अपनी ऊर्जा, रचनात्मकता और अनुकूलनशीलता के साथ, वे नवाचार और उद्यमशीलता के उपक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए अच्छी स्थिति में हैं, जो आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं। भविष्य के किसी भी लक्ष्यों को प्राप्त करने समृद्धि, प्रगति, शांति और सुरक्षा के लिए युवाओं की भागीदारी आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बालकृष्णन पी 2022 , इंडियाज इकोनॉमी फ्रॉम नेहरू टू मोदी ए ब्रीफ हिस्टरी ।
2. हैरिसन आर एल एंड रैली टी एम मिक्सड मैथड डिजाइन इन मार्केटिंग रिसर्च एन इंटरनेशन जर्नल 14 (1) पेज 7 से 26।
3. विकसित भारत /2024 वॉयस ऑफ यूथ अ कोलेबोरेटिव एप्रोच फॉर अ डिवेलप नेशन 2023।
4. रोडिक डी एंड सुब्रमण्यम अ (2004) फ्रॉम हिंदू ग्रोथ तो प्रोडक्टिविटी सर्ग : द मेस्ट्री ऑफ द इंडियन ग्रोथ ट्रांजियन।
5. मेथी गोई (2024) विकसित भारत /2047https//innovateindia.mygov.in// अंतिम बार 24/09/ 2024 को एक्सेस किया गया।
6. प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया, भारत सरकार (2024). विकसित भारत / 2047 के लिए विजन दस्तावेज तैयार किया जा रहा है- https//www.financiale&press.com/policy/ पर उपलब्ध है।
7. economy vision document being prepared for viksitbharat 2047 niti&ceo subrahmanyam 3321133/ अंतिम बार 03 फरवरी, 2024 को एक्सेस किया गया।
8. भारत का राष्ट्रीय पोर्टल, भारत सरकार। https//www.india.gov.in/my&government/schemesपर उपलब्ध है, अंतिम बार 03 फरवरी, 2024 को एक्सेस किया गया।

9. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार नई दिल्ली (2023) विकसित भारत संकल्प यात्रा को जनता का व्यापक समर्थन मिला https//pib.gov.in [aC[bãYh¡in/PressReleaseIframePage-aspPRID197 7618 अंतिम बार 03 फरवरी, 2024 को एक्सेस किया गया।
10. राज कुमार, सी. (2024, जनवरी 04) भारत की युवा आबादी का लाभ उठाने के लिए विश्वविद्यालयों की पुनर्कल्पना करें। हिंदुस्तान टाइम्स।
11. बेरी, एस. (2023) विकसित भारत / 2047: आज स्नातक करने वालों के लिए यह क्यों मायने रखता है। विश्वविद्यालय समाचार। भारतीय विश्वविद्यालयों का संघ। 61(43): 83–85।
12. बानो, टी., और वर्गीस, ए. (2023)। विकसित भारत संकल्प यात्रा: स्वास्थ्य परिप्रेक्ष्य। इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिटी हेल्थ, 35(4), 389I391 https//doi.org/10-47203/IJCH-2023-v35i04-001

****